प्राक्कथन

विश्व में मलेरिया अभी भी एक गंभीर स्वास्थ्य समस्या बनी हुई है और विश्व की 40 प्रतिशत आबादी को मलेरिया की चपेट में आने की आशंका बनी रहती है। हाल में जारी विश्व मलेरिया रिपोर्ट (2005) के अनुसार विश्व में 30 से 55 करोड़ लोग मलेरिया से ग्रस्त होते हैं जिनमें दस लाख से अधिक मौतें होती हैं। भारत भी मलेरिया से अछूता नहीं है तथा यहां प्रतिवर्ष लगभग 20 लाख लोग मलेरिया से ग्रस्त होते हैं एवं अनुमानतः 1000 लोग मौत का शिकार हो जाते हैं। तात्पर्य यह है कि भारत में मलेरिया की उपस्थिति और उसके कारण होने वाली मौतें एक अत्यंत गंभीर चिन्ता का विषय हैं। इसके अतिरिक्त, तेजी से होते पर्यावरणीय परिवर्तनों, शहरीकरण, विकास संबंधी गतिविधियों एवं लोगों के आवागमन आदि से यह विभिन्न प्रतिरूप में प्रकट हो रहा है जिसका नियंत्रण उतना ही जटिल और चुनौतीपूर्ण है।

मलेरिया के क्षेत्र में शोधरत वैज्ञानिक और उनसे संबद्ध सहायक, फील्ड कार्यकर्ता, कीटविज्ञानियों आदि के लिए इस रोग के लिए जिम्मेदार रोगवाहक मच्छरों की पहचान करना एक चुनौतीपूर्ण कार्य होता है। मलेरिया के रोगवाहक मच्छर जीनस एनॉफिलीज़ के अंतर्गत आते हैं। मलेरिया की उपस्थिति वाले क्षेत्रों में एनॉफिलीज़ मच्छरों में विविधता के कारण उनकी पहचान में कठिनाइयां आती हैं। इस समस्या से निपटने के लिए परिषद के दिल्ली स्थित राष्ट्रीय मलेरिया अनुसंधान संस्थान (एन आई एम आर) के वैज्ञानिकों ने "*पिक्टोरियल आइडेंटीफिकेशन की फ़ॉर इंडियन एनॉफिलीस*" नामक एक पुस्तिका तैयार की है। देश के हिन्दी भाषी क्षेत्रों में मलेरिया की व्यापकता अधिकतम है तथा एन आई एम आर के अधिकांश फील्ड स्टेशन इन्हीं क्षेत्रों में स्थित हैं। उन क्षेत्रों में कार्यरत विशेषतया शोध सहायकों और फील्ड कार्यकर्ताओं की सुविधा के लिए एनॉफिलीज़ मच्छरों की पहचान के लिए इस पुस्तिका का हिन्दी रूपान्तरण परिषद मुख्यालय के प्रकाशन एवं सूचना प्रभाग द्वारा तैयार किया गया है।

आशा है "भारतीय एनॉफिलीज़ मच्छरों की सचित्र पहचान कुंजी" मलेरिया नियंत्रण से संबद्ध कार्यालयों, राज्य कीटविज्ञानियों तथा अन्य सहायकों के लिए अत्यधिक उपयोगी होगी।

निर्मल कुमार गांगुली

जुलाई 2007

(प्रो. निर्मल कुमार गांगुली)
महानिदेशक